अरहर की वैज्ञानिक खेती

राँची में 2015-16 में 10322 हे. क्षेत्र में अरहर की खेती की गयी। जिसकी उत्पादकता 875 कि.ग्रा. प्रति हे. थी।

भूमि की तैयारी : गर्मी में मिट्टी पलटने वाले हल से खेत की गहरी जुताई करें तथा देशी हल से दो जुताई करके मिट्टी को भुरभुरी कर लें। वर्षा आरंभ होने के बाद बखर चलाकर घास-फूस निकालकर खेत तैयार करें।

बोआई का समय : जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक।

किस्म का चुनाव : आशा, उपास-120, लक्ष्मी, पूसा-992, शरद, मालवीय अरहर-3, प्रगति, पूसा-9, बहार, बिरसा अरहर-1 आदि।

बीजोपचार : जैविक विधि – बीज संजीवनी द्वारा - बीज संजीवनी बनाने हेतु 1 भाग गोबर 1 भाग गोमूत्र एवं 2 भाग पानी मिलाकर मिट्टी के घड़े में रख दें। घड़े के मुख को सूती कपड़े से बांध दें। प्रतिदिन लकड़ी के डंडे से घड़ी की दिशा एवं विपरीत दिशा में एक बार चलाएँ। निरंतर 7-10 दिनों तक चलाने के पश्चात बीज संजीवनी तैयार हो जाती है, जिसका प्रयोग बीजोपचार के लिए कर सकते हैं। बीजोपचार हेतु 1 लीटर मिश्रण में 750 मि.ली. पानी मिलाकर घोल तैयार करते हैं एवं बीज को डुबाकर 10 मिनट तक छोड़ देते हैं। उसके पश्चात बीज को मिश्रण से निकालकर राइजोबियम कल्चर एवं पी.एस.बी. कल्चर 1 पैकेट प्रति 10 कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित कर बोआई करते हैं।

रासायनिक विधि : बीज की फफूंदनाशक दवा थीरम 2 ग्राम तथा बेविस्टिन 1 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से मिलाकर उपचारित करें/इसके बाद राइजोबियम एवं पी.एस.बी. कल्चर से बीज को उपचारित कर बोआई करें।

बीज दर एवं बोआई विधि :

पकने की अवधि

1. शीघ्र पकने वाली प्रजातियाँ (120-160 दिन) : प्रगति, उपास 120, पूसा अगेती, पूसा 74, पूसा 84, पूसा 992; बीज दर – 30 कि.ग्रा./हे.।
2. मध्यम समय में पकने वाली प्रजातियाँ (150-210 दिन) : आशा, पूसा-9, लक्ष्मी, मालवीय अरहर-3, मुक्ता आइ.सी.पी.एल. 85063, बी.आर. 65, बी.आर. 183, एम.ए. 6; बीज दर – 20 कि.ग्रा./हे.।
3. देर से पकने वाली प्रजातियाँ (210-240 दिन) : बहार, बिरसा अरहर-1, मालवीय चमत्कार।
4. अधिक देर से पकने वाली प्रजातियाँ (240-280 दिन) : मालवीय विकास,नरेन्द्र अरहर-1,शरद, टी. 7, टी. 17, एन.पी. (डब्लू.आर.) 15, ए.एस. 71-77, एम.ए.एल. 13, आजाद, पूसा 9; बीज दर – 15 कि.ग्रा./हे.।

सिंचाई प्रबंधन : यदि वर्षा न हो तो फूल आने के पूर्व एक सिंचाई जरूर करें। अधिक वर्षा होने पर उचित जल निकास की व्यवस्था अवश्य करें।

पोषक तत्व प्रबंधन : भूमि की भौतिक दशा को ठीक रखने के लिए 5 टन गोबर की खाद का उपयोग करें। सामान्यतः प्रति हेक्टेयर 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन एवं 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस के तथा 20 कि.ग्रा. पोटाश वेसल डोज में दे।

निकाई गुड़ाई द्वारा : बोआई के 20-25 दिन के पश्चात निकाई गुड़ाई करें जिससे खरपतवार के साथ-साथ भूमि में वायु संचार की गति में भी वृद्धि हो जाती है।

कटाई व उपज : इस प्रकार उन्नत शस्य क्रियायें अपनाकर 12-15 क्विं./हे. उपज प्राप्त होती है जिसको भलीभाँति सुखाकर 8-10% नमी पर भण्डारित करना चाहिए।

अरहर के साथ अंतःफसली खेती : अरहर लंबी अवधि की वर्षा आधारित फसल होने के कारण अंतःफसली खेती के लिए काफी उपयुक्त मानी जाती है। अरहर की दो पंक्तियों के बीच में उड़द, मूंग, लोबिया, मूंगफली, सोयाबीन की दो पंक्तियों में बोआई करें जिससे खरपतवार को पनपने का मौका नहीं मिलता है साथ ही कम समय में अतिरिक्त लाभ मिल जाता है। अरहर की खेती मक्का, गोड़ा धान एवं मडुआ के साथ भी की जाती है। अगर मोटे अनाज को अंतर्फसल के रूप में चयनित करते है तो उस फसल की अनुशंसित उर्वरक मात्रा दे एवं अरहर के लिए अलग से उर्वरक देने की आवश्यकता नहीं होती है।

×××××